



न्यायालय

सहायक कलक्टर/उपखण्ड अधिकारी

गुडामालानी-बाड़मेर

(पीठासीन अधिकारी -केशव कुमार मीना आर.ए.एस.)

वाद संख्या:- 2024 / 277

दर्ज तिथि:-12.07.2024

1. वरजांगाराम पुत्र भगाराम जाति रबारी निवासी आलपुरा तहसील गुडामालानी जिला बाड़मेर।

.....प्रार्थीगण

बनाम

1. जोरा पुत्र खंगाराम
2. गंवरीदेवी पत्नी लुम्बराज जाति कलबी निवासी सिंधासवा हरनियान तहसील गुडामालानी गुडामालानी-बाड़मेर
3. कानाराम पुत्र जीवाराम जाति घांची
4. किशनाराम पुत्र जेताराम जाति विश्नोई निवासी गुडामालानी
5. हमीराराम पुत्र भगाराम जति रबारी निवासी आलपुरा गुडामालानी
6. राजस्थान सरकार जरिये तहसीलदार गुडामालानी

.....अप्रार्थीगण

उपस्थित अधिवक्ता

प्रार्थी:- श्री सुखराम विश्नोई

प्रतिवादीगण:- डालूराम चौधरी

प्रार्थना-पत्र अन्तर्गत धारा-251ए

राजस्थान काश्तकारी अधि.-1955

:-निर्णय:-

निर्णय तिथि:-10.02.2025

1. आज यह पत्रावली प्रार्थना पत्र अन्तर्गत धारा 251-क राजस्थान काश्तकारी अधिनियम-1955 वास्ते निर्णय पेश हुई। प्रकरण का सुक्ष्म वृत्तान्त इस प्रकार से है कि प्रार्थी द्वारा राजस्थान काश्तकारी अधिनियम 1955 की धारा 251-'क' के अन्तर्गत एक प्रार्थना पत्र प्रस्तुत कर निवेदन किया है कि प्रार्थी की खातेदारी आराजी 331/2/3. 2375 है0 मौजा आलपुरा तहसील गुडामालानी में अवस्थित है। प्रार्थी की आराजी तक पहुँच के प्रयोजन के लिए अप्रार्थीगण की आराजी हाल खसरा संख्या 328, 330, 330/11, 330/3, 330/8, 331/1 मौजा आलपुरा तहसील गुडामालानी से होते हुए आवागमन करते आए हैं। परंतु अप्रार्थीगण द्वारा अपनी खातेदारी आराजी में फसल



करने से प्रार्थी का रास्ता अवरुद्ध हो जाता है। इससे रास्ते को लेकर भारी विरोध रहता है एवं झगड़े की संभावना बनी रहती है। उक्त रास्ते के अतिरिक्त प्रार्थी की आराजी तक वर्तमान में कोई रिकॉर्डेड रास्ता चालू नहीं है। अतः खसरा संख्या 328, 330, 330/11, 330/3, 330/8, 331/1 मौजा आलपुरा तहसील गुड़ामालानी में से होकर प्रार्थी की आराजी तक नवीन रिकॉर्डेड रास्ता हेतु अनुतोष चाहा गया है। अंत में प्रार्थी की आराजीयात तक कोई रिकॉर्डेड रास्ता दर्ज रिकॉर्ड नहीं है तथा उक्त आवेदित रास्ते के अतिरिक्त अन्य कोई लघुत्तम मार्ग का विकल्प नहीं होने के कारण उक्त आवेदित रास्ते को रिकॉर्ड में दर्ज कर प्रार्थी का प्रार्थना-पत्र स्वीकार किये जाने का निवेदन किया।

जवाब/रिपोर्ट

2. प्रार्थना पत्र दर्ज रजिस्टर किया जाकर अप्रार्थीगण को जरिये नोटिस तलब किया गया। अप्रार्थीगण संख्या 01 व 02 के अतिरिक्त शेष अप्रार्थीगण के बावजूद विधिवत तामिल अनुपस्थित रहने के कारण शेष अप्रार्थीगण के विरुद्ध एकतरफा कार्यवाही अमल में लाई गई। अप्रार्थी संख्या 01 व 02 असालतन-वकालतन हाजिर न्यायालय होकर जवाब प्रस्तुत कर निवेदन किया कि प्रार्थी का रहवास खसरा संख्या 331/2 में नहीं है तथा खसरा संख्या 328, 330/11 में वर्तमान में चलायमान रास्ता उपलब्ध नहीं है। अप्रार्थी संख्या 01 व 02 के अधिवक्ता द्वारा आगे कथन किया गया कि प्रार्थी के खसरे से पहुंच हेतु जवाब के साथ प्रस्तुत परिशिष्ट-बी में दर्शाये अनुसार लघुत्तम वैकल्पिक रास्ता उपलब्ध है। साथ ही मौका रिपोर्ट संबंधित भू-अभिलेख निरीक्षक द्वारा बिना प्रार्थी को सूचित किये और बिना मौका देखे तैयार की गई है। प्रार्थी द्वारा आवेदित रास्ते पर अप्रार्थीगण के ढाणी व टांके बने हुए हैं। साथ ही खसरा संख्या 330 व 330/8 की किस्म गै0मु0 नदी होने के कारण प्रतिबंधित किस्म की जगह से रास्ता का अंकन किया जाना विधि विरुद्ध है। साथ ही उक्त मौका रिपोर्ट में लघुत्तम मार्ग का अंकन नहीं किया गया है। जबकि प्रार्थी की आराजी तक पहुंचने हेतु सबसे नजदीकी विकल्प खसरा संख्या 329, 330, 330/12, 330/8, 331/1 के पश्चिमी कोने से होकर है। जिसको परिशिष्ट-बी के रूप में प्रदर्शित कर संलग्न किया गया है। वर्तमान में प्रार्थी का खसरा पूर्व दिशा से चालू आम रास्ते से जुड़ा हुआ है। इस आधार पर प्रार्थी को रास्ते की आत्यांतिक आवश्यकता नहीं है। साथ ही अप्रार्थी संख्या 01 व 02 के खसरों का रकबा भी कम है। इन खसरों में से होकर रास्ता दिये जाने से अप्रार्थीगण का रकबा और कम हो जाएगा। अतः प्रार्थी का प्रार्थना-पत्र पोषणीय नहीं होने के कारण काबिल-ए-खारिज है।
3. प्रकरण में तहसीलदार गुड़ामालानी राजस्थान काश्तकारी (सरकार) नियम-1955 के नियम-68 लगायत 70 के अनुसार पुनः मौका जाँच रिपोर्ट तलब की गई। प्रकरण में तहसीलदार गुड़ामालानी द्वारा पत्रांक/कोर्ट/आरए/2024/2064 दिनांक 24.09.2024 के अनुसार प्रेषित मौका रिपोर्ट तैयार करने में अपनायी गई प्रक्रिया का विवरण निम्न प्रकार है:-

प्रक्रिया हेतु प्रावधान	अपनायी गई प्रक्रिया
<i>Sub-Divisional Officer shall either inspect the site himself or</i>	भू-अभिलेख निरीक्षक, रतनपुरा मय पटवारी मौका निरीक्षण किया जाकर मौका रिपोर्ट तैयार की गई।
<i>get it inspected by an officer not below the rank of the Inspector Land Records</i>	प्रकरण में दिनांक 06.09.2024 को भू-अभिलेख द्वारा मय पटवारी स्वयं मौका निरीक्षण किया जाकर मौका रिपोर्ट तैयार की गई।
प्रकरण में पक्षकारो को मौका निरीक्षण हेतु जरिये नोटिस मौका निरीक्षण की दिनांक के बारे में पूर्वसूचित किया जाकर मौका रिपोर्ट तैयार की गई।	1. प्रकरण में समस्त प्रार्थीगण को मौका निरीक्षण हेतु कार्यालय तहसीलदार तहसील गुड़ामालानी के नोटिस क्रमांक 816-821 दिनांक 28.08.2024 द्वारा मौका निरीक्षण की दिनांक 06.09.2024 के बारे में पूर्वसूचित किया जाकर मौका रिपोर्ट तैयार की गई। 2. प्रकरण में समस्त अप्रार्थीगण को मौका निरीक्षण हेतु कार्यालय तहसीलदार तहसील गुड़ामालानी के नोटिस क्रमांक 816-821 दिनांक 28.08.2024 द्वारा मौका निरीक्षण की दिनांक 06.09.2024 के बारे में पूर्वसूचित किया जाकर मौका रिपोर्ट तैयार की गई। रिपोर्ट का नजरी नक्शा निम्न प्रकार है:-

सत्यमेव जयते

गुड़ामालानी

रूट संख्या 01

सुप्रीम कोर्ट का आदेश द्वारा 25/1/24

दिनांक 10/2024

विराट-वरजांगाराम बनाम जोराराम

ग्राम-डोलपुरा

तहसील-गुडामालानी

पैमाना - 1 इंच = 200 गज

संकेत
 - खानेपानी बूटि के तहत प्रस्तावित रास्ता
 - राजकीय नदी में रास्ता के उपयोग की शक्ति



विराट
 दि 27/1/24
 पुर 27/1/24

अभिभाषक (भू.अ.) गुडामालानी
 तहसील- गुडामालानी

जोराराम
 27/1/24
 गणपत राज

05/07/24
 पं० गुडामालानी

जिरह

4. प्रकरण में विद्वान अभिभाषक प्रार्थी की जिरह सुनी गई। अभिभाषक प्रार्थी ने दौराने-ए-जिरह प्रार्थना-पत्र में अंकित तथ्यों को दौहराते हुए प्रार्थी की आराजीयात तक कोई रिकॉर्डेड रास्ता दर्ज रिकॉर्ड नहीं है तथा उक्त आवेदित रास्ते के अतिरिक्त अन्य कोई लघुत्तम मार्ग का विकल्प नहीं होने के कारण उक्त आवेदित रास्ते को रिकॉर्ड में दर्ज कर प्रार्थी का प्रार्थना-पत्र स्वीकार किये जाने का निवेदन किया। अभिभाषक अप्रार्थी ने दौराने-ए-जिरह तहसीलदार गुडामालानी द्वारा पत्रांक/कोर्ट/आरए/2024/2064 दिनांक 24.09.2024 द्वारा प्रेषित मौका रिपोर्ट के बिना अप्रार्थीगण को सूचना दिये व बिना मौका देखे बनाने के साथ ही प्रार्थी को रास्ते की आत्यांतिक आवश्यकता नहीं होने तथा प्रार्थी की आराजी तक पहुंचने हेतु सबसे नजदीकी विकल्प खसरा संख्या 329, 330, 330/12, 330/8, 331/1 के पश्चिमी

कोने से होकर वैकल्पिक व लघुत्तम रास्ता उपलब्ध होने तथा प्रार्थी द्वारा आवेदित मार्ग के प्रतिबंधित भूमि होने के कारण प्रार्थी का अनुतोष पोषणी नहीं होने के कारण प्रार्थी का प्रार्थना-पत्र खारिज करने का निवेदन किया।

कानूनी-प्रावधान

5. प्रकरण में प्रार्थना पत्र के साथ तहसीलदार की मौका-रिपोर्ट का अवलोकन किया गया। बहस पर मनन किया गया। प्रकरण में तथ्यों का गहन विश्लेषण से पूर्व राजस्थान काश्तकारी अधिनियम-1955 की धारा 251-'क' का उद्धरण यहाँ प्रतीत होता है-

251A. Laying of underground pipeline or opening a new way through another khatedar's holding or enlarging the existing way. - (1) Where -

(a) a tenant intends to lay an underground pipeline through the holding of another khatedar for the purpose of irrigation of his holding; or

(b) a tenant or a group of tenants intend to have a new way, or enlargement or widening of an existing way, through the holding of another khatedar to have access to his holding or, as the case may be, their holdings of and the matter is not settled by mutual agreement, the tenant or the tenants, as the case may be, may apply for such facility to the Sub-Divisional Officer concerned, and the Sub-Divisional Officer, if he is satisfied after a summary inquiry, that

(i) the necessity is absolute necessity and it is not for mere convenient enjoyment of holding; and

(ii) particularly in case of a new way through another khatedar's holding, that absence of alternative means of access proved may, be order, allow the applicant, to lay pipeline, at least three feet beneath the surface of the land, along 'the line demarcated or pointed out by the tenant who holds that land, or to have a new way, not wider than thirty feet, through the land on such track as pointed out by the tenant who holds that land, and if no such track is pointed out, through the shortest or nearest route, or to enlarge or widen the existing way, not exceeding up to thirty feet, on payment of such compensation as may be determined by the Sub-Divisional Officer, in the prescribed manner, to the tenant who holds the land through which the right to lay pipeline or have a new way or enlarge or widen an existing way is granted or in lieu of payment of compensation, on transfer of land in exchange of equal area in the name of such tenant preferably having the same price and adjoining to his land.

(2) Where a right to have a new way or enlarge or widen an existing way is granted under sub-section (1), the tenancy in respect of the land comprising such way shall be deemed to have been extinguished and the land shall be recorded as rasta in the revenue records.

(3) The persons permitted to avail any of the facilities referred to in sub-section (1) shall not, by virtue of the said facility, acquire any other right in the holding through which such facility is granted.

5. इसी प्रकार राजस्थान काश्तकारी अधिनियम-1955 की धारा 251-'क' के प्रावधानों की क्रियान्विति हेतु बनाये गये राजस्थान काश्तकारी (सरकार) नियम 1955 के नियम 68 लगायत 70 का उद्धरण करना यहां प्रासंगिक प्रतीत होता है जो इस प्रकार है-

68. Application under Sec. 251-A. - *An application for grant of permission under sub-sec. (1) of 251-A of the Act shall be in Form 1.*

69. Enquiry and disposal of application. - *On receipt of an application in Form I, the Sub-Divisional Officer shall either inspect the site himself or get it inspected by an officer not below the rank of the Inspector Land Records and invite objections from the affected persons. The Sub-Divisional Officer after affording an opportunity of being heard to the parties and making such further enquiry, as he thinks necessary, if satisfied that-*

(i) the necessity is absolute necessity and it is not for mere convenient enjoyment of holding; and

(ii) particularly in case of a new way through another khatedar's holding, that absence of alternative means of access is proved, may allow the application. The application shall be decided by the Sub-Divisional Officer within 90 days from the date of application.

70. Determination of compensation. - *(1) The amount of compensation payable under sub-sec. (1) of Sec. 251-A of the Act, shall be determined in the following manner:-*

(i) if the parties mutually agree on the amount of compensation, the Sub-Divisional Officer, shall determine the amount of compensation as per the mutual agreement.

(ii) if the parties do not agree mutually on the amount of compensation, the Sub-Divisional Officer shall determine the amount of compensation for the land equivalent to-

(a) two times of the rates recommended by the District Level Committee constituted under clause (b) of sub-rule (D) of Rule 2 of the Rajasthan Stamps Rules, 2004 or the rates determined by the State Government under sub-rule (2) of Rule 58 of the Rajasthan Stamps Rules, 2004, in the matter of a new way or enlargement or widening of an existing way; and

(b) 10% of the rates recommended by the District Level Committee; constituted under clause (b) of sub-rule (1) of Rule 2 of the Rajasthan Stamps Rules, 2004 or the rates determined by the State Government under sub-rule (2) of Rule 58 of the

Rajasthan Stamps Rules, 2004, in the matter of laying underground pipeline.

(2) In addition to the value of land determined under clause (a) or (b) of sub-rule j (1), if any loss or damages caused due to removal of standing trees, crops or structure, the amount of actual loss or damages shall also be determined.

विश्लेषण

6. उक्त राजस्थान काश्तकारी अधिनियम-1955 की धारा 251-क एवं राजस्थान काश्तकारी (सरकार) नियम-1955 के नियम-68 लगायत 70 के अवलोकन से स्पष्ट है कि धारा 251-क के अन्तर्गत कोई खातेदार अपनी खातेदारी आराजी तक कृषि कार्य बाबत आमद-रफत हेतु अन्य खातेदारों की खातेदारी आराजी में से होकर कुछ शर्तों के अधीन नवीन रास्ता रिकॉर्डेड अंकित करवा सकता है। इस हेतु उक्त राजस्थान काश्तकारी अधिनियम-1955 की धारा 251-क निम्न पूर्वशर्तों को आरोपित करती है जो इस प्रकार है-

1. प्रार्थी हेतु रास्ते बाबत अन्य रिकॉर्डेड रास्ते के विकल्प की अनुपस्थिति।
2. खातेदार की रास्ते बाबत आत्यान्तिक आवश्यकता।
3. लघुत्तम दूरी का नवीन मार्ग के विकल्प का प्रस्ताव।

वैकल्पिक रास्ते की अनुपलब्धता

7. राजस्थान काश्तकारी अधिनियम-1955 की धारा-251-क एवं राजस्थान काश्तकारी (सरकार) नियम-1955 के नियम-68 लगायत 70 द्वारा अध्यारोपित उक्त पूर्वशर्तों के तहत प्रकरण का विश्लेषण किया जाना अपेक्षित है। सर्वप्रथम प्रथम शर्त प्रार्थी हेतु रास्ते बाबत अन्य रिकॉर्डेड रास्ते के विकल्प की अनुपस्थिति का विश्लेषण किया जाना अपेक्षित है। उक्त प्रावधान के अंतर्गत सर्वप्रथम यह देखा जाना आवश्यक है कि प्रार्थी की खातेदारी आराजी तक पहुंच हेतु कोई रिकॉर्डेड रास्ता उपलब्ध नहीं है अथवा नहीं। उक्त शर्त के विश्लेषण में निम्न तीन स्थितियां सामने आती हैं:-

1. प्रथम स्थिति में अगर प्रार्थी की खातेदारी आराजी तक पहुंच हेतु कोई रिकॉर्डेड रास्ता पूर्व से उपलब्ध है और उक्त रिकॉर्डेड रास्ता मौके पर चालू है तो ऐसी स्थिति में प्रार्थी को उक्त रिकॉर्डेड रास्ते से ही आवागमन करना चाहिए। इस स्थिति में उक्त आधार पर प्रार्थी का प्रार्थना-पत्र खारिज किया जाना उचित प्रतीत होता है।
2. द्वितीय स्थिति में अगर प्रार्थी की खातेदारी आराजी तक पहुंच हेतु कोई रिकॉर्डेड रास्ता पूर्व से उपलब्ध है और उक्त रिकॉर्डेड रास्ता मौके पर अतिक्रमण की वजह से चालू नहीं है तो ऐसी स्थिति में प्रार्थी को उक्त रिकॉर्डेड रास्ते को मौके पर अतिक्रमण हटवाकर चालू करवाने के लिये संबंधित कानूनी प्रावधानों के तहत कार्यवाही करते हुए अनुतोष प्राप्त करना चाहिए। इस स्थिति में उक्त आधार पर प्रार्थी का प्रार्थना-पत्र खारिज किया जाना उचित प्रतीत होता है।

3. तृतीय स्थिति में अगर प्रार्थी की खातेदारी आराजी तक पहुंच हेतु कोई रिकॉर्डेड रास्ता उपलब्ध नहीं है तो उस स्थिति में प्रार्थी के प्रार्थना-पत्र को प्रथम शर्त को पुष्ट मानते हुए द्वितीय शर्त पर परखा जाना चाहिए।

8. उक्त प्रकरण में प्रार्थी ने अपने प्रार्थना पत्र के पैरा संख्या-2 में अन्य वैकल्पिक रास्ते की अनुपलब्धता का जिक्र किया गया है। प्रकरण में तहसीलदार गुड़ामालानी द्वारा पत्रांक/कोर्ट/आए/2024/2064 दिनांक 24.09.2024 द्वारा प्रेषित मौका रिपोर्ट के अवलोकन से भी प्रार्थी की खातेदारी आराजी तक रिकॉर्डेड रास्ते का अंकन नहीं होना स्पष्ट किया गया है। प्रकरण में राजस्व ग्राम आलपुरा तहसील गुड़ामालानी के राजस्व नक्शे में प्रासंगिक भाग के अवलोकन से प्रतीत होता है कि प्रार्थी की खातेदारी आराजी तक पहुंच हेतु कोई वैकल्पिक रास्ता दर्ज रिकॉर्ड नहीं है। इस प्रकार प्रकरण उक्त तृतीय स्थिति के अंतर्गत आता है एवं शर्त संख्या 01 की पूर्णरूप से पुष्टि प्रतीत होती है।

रास्ते की आत्यांतिक आवश्यकता

9. प्रथम शर्त की पुष्टि पश्चात् द्वितीय शर्त खातेदार की रास्ते बाबत आत्यान्तिक आवश्यकता का विश्लेषण किया जाना अपेक्षित है। उक्त प्रावधान के अंतर्गत यह देखा जाना आवश्यक है कि प्रार्थी की खातेदारी आराजी तक पहुंच हेतु वास्तव में रास्ते की आवश्यकता केवल सुविधाजनक नहीं होकर आवश्यकता आत्यांतिक है। उक्त शर्त के विश्लेषण में निम्न तीन स्थितियां सामने आती हैं:-

1. प्रथम स्थिति में प्रार्थी द्वारा आवेदित रास्ता पूर्व से ही दर्ज रिकॉर्ड/कट्टाण रास्ते/सड़क से आरम्भ होकर प्रार्थी की आराजी तक नवीन रास्ता चाहा गया है। ऐसी स्थिति में स्पष्ट होता है कि प्रार्थी द्वारा पूर्व से ही दर्ज रिकॉर्ड एवं विद्यमान/मौके पर चालू रास्ते से आगे अपनी खातेदारी आराजी तक पहुंच हेतु रास्ता चाहा गया है। इस स्थिति में प्रार्थी को अपनी खातेदारी आराजी तक पहुंच हेतु वास्तव में रास्ते की आवश्यकता केवल सुविधाजनक नहीं होकर आवश्यकता आत्यांतिक प्रतीत होती है। उक्त स्थिति में प्रार्थी का प्रार्थना-पत्र द्वितीय शर्त की पुष्टि करता प्रतीत होता है।
2. द्वितीय स्थिति में प्रार्थी द्वारा पूर्व से ही प्रार्थी की खातेदारी आराजी तक पहुंचने वाले लेकिन रिकॉर्ड में दर्ज नहीं होकर केवल मौके पर चालू कदीमी रास्ते/सड़क को धारा-251-ए के तहत विद्यमान मौके पर चालू कदीमी रास्ते/सड़क की चौड़ाई या विस्तारित चौड़ाई के रास्ते पर नवीन रिकॉर्डेड रास्ता चाहा गया है। ऐसी स्थिति में स्पष्ट होता है कि प्रार्थी द्वारा पूर्व से ही विद्यमान/मौके पर चालू रास्ते को ही रिकॉर्ड में दर्ज करवाने हेतु रास्ता चाहा गया है। इस स्थिति में प्रार्थी को अपनी खातेदारी आराजी तक पहुंच हेतु वास्तव में रास्ते की आवश्यकता केवल सुविधाजनक नहीं होकर आवश्यकता आत्यांतिक प्रतीत होता है। उक्त स्थिति में भी प्रार्थी का प्रार्थना-पत्र द्वितीय शर्त की पुष्टि करता प्रतीत होता है।

3. तृतीय स्थिति में प्रार्थी द्वारा आवेदित रास्ता पूर्व से ही दर्ज रिकॉर्ड/कट्टाण रास्ते/सड़क से कोई संबंध नहीं रखता है तथा प्रार्थी द्वारा केवल एक या एक से अधिक खसरों से होकर नवीन रास्ता चाहा गया है। ऐसी स्थिति में प्रतीत होता है कि प्रार्थी द्वारा अपनी खातेदारी आराजी तक पहुंच हेतु सम्पूर्ण रास्ते को रिकॉर्ड में दर्ज करवाने हेतु अनुतोष नहीं चाहा गया है। यहां यह संशय उत्पन्न होता है कि प्रार्थी द्वारा गलत मंशा से प्रार्थना-पत्र प्रस्तुत किया गया है। इस स्थिति में प्रार्थी को अपनी खातेदारी आराजी तक पहुंच हेतु वास्तव में रास्ते की आवश्यकता आत्यांतिक नहीं होकर केवल सुविधाजनक प्रतीत होती है। उक्त स्थिति में प्रार्थी का प्रार्थना-पत्र द्वितीय शर्त की पुष्टि नहीं करता प्रतीत होता है।
4. चतुर्थ स्थिति में प्रार्थी द्वारा आवेदित रास्ता पूर्व से ही दर्ज रिकॉर्ड/कट्टाण रास्ते/सड़क से कोई संबंध नहीं रखता है तथा प्रार्थी द्वारा केवल एक या एक से अधिक खसरों से होकर नवीन रास्ता चाहा गया है। ऐसी स्थिति में प्रतीत होता है कि प्रार्थी द्वारा अपनी खातेदारी आराजी तक पहुंच हेतु सम्पूर्ण रास्ते को रिकॉर्ड में दर्ज करवाने हेतु अनुतोष नहीं चाहा गया है। यहां यह स्थिति हो सकती है कि जिन खसरों से रास्ते का अंकन नहीं चाहा गया है वो कोई प्रतिबंधित भूमि किस्म या सामलाती भूमि यथा-चारागाह, नदी, नाले आदि के खसरे हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में प्रतिबंधित भूमि किस्म या सामलाती भूमि से होकर रास्ते के अंकन की आवश्यकता नहीं होती है। ऐसी स्थिति में केवल खातेदारी भूमि से होकर रास्ते का अंकन तथा प्रतिबंधित भूमि में रास्ते का गैर-अंकन अपेक्षित होता है। इस स्थिति में प्रार्थी को अपनी खातेदारी आराजी तक पहुंच हेतु वास्तव में रास्ते की आवश्यकता आत्यांतिक प्रतीत होती है। उक्त स्थिति में प्रार्थी का प्रार्थना-पत्र द्वितीय शर्त की पुष्टि करता प्रतीत होता है।
10. उक्त प्रकरण में प्रार्थी ने अपने प्रार्थना पत्र के पैरा संख्या-2 में अन्य वैकल्पिक रास्ते की अनुपलब्धता का जिक्र किया गया है। प्रकरण में तहसीलदार गुड़ामालानी द्वारा पत्रांक/कोर्ट/आरए/2024/2064 दिनांक 24.09.2024 द्वारा प्रेषित मौका रिपोर्ट के अवलोकन से भी प्रार्थी की खातेदारी आराजी तक रिकॉर्डेड रास्ते का अंकन नहीं होना स्पष्ट किया गया है। प्रकरण में राजस्व ग्राम आलपुरा तहसील गुड़ामालानी के राजस्व नक्शे में प्रासंगिक भाग के अवलोकन से प्रतीत होता है कि प्रार्थी की खातेदारी आराजी तक पहुंच हेतु कोई वैकल्पिक रास्ता दर्ज रिकॉर्ड नहीं है। उक्त प्रकरण स्थिति संख्या 04 के अंतर्गत आता है। इस प्रकार प्रकरण में प्रार्थी को नवीन रास्ते की आवश्यकता केवल सुविधाजनक नहीं होकर आत्यांतिक प्रतीत होती है। इस प्रकार शर्त संख्या 02 की पूर्णरूप से पुष्टि होती है।

लघुत्तम मार्ग का निर्धारण

11. अतः उक्त विश्लेषण के अनुसार शर्त संख्या 1 व 2 की पूर्णरूप से पुष्टि होती है। राजस्थान काश्तकारी अधिनियम-1955 की धारा 251-क तथा राजस्थान काश्तकारी

(सरकार) नियम-1955 के नियम-68 लगायत 70 के अवलोकन से स्पष्ट है कि राजस्थान काश्तकारी अधिनियम-1955 की धारा 251-क के तहत आरोपित शर्त संख्या 1 व 2 की पूर्णरूप से पुष्टि होने के पश्चात् न्यायालय द्वारा तृतीय शर्त लघुत्तम दूरी का नवीन मार्ग के विकल्प का प्रस्ताव बिन्दु पर विश्लेषण किया जाना है कि उक्त नवीन रास्ता किस आराजी में से होकर किस रूट से होकर कितनी चौड़ाई का लघुत्तम मार्ग रास्ता का अनुतोष स्वीकार किया जाना है। उक्त प्रावधान के अंतर्गत यह देखा जाना आवश्यक है कि प्रार्थी की खातेदारी आराजी तक पहुंच हेतु प्रार्थना-पत्र में आवेदित रास्ते ही लघुत्तम रास्ता है अथवा अप्रार्थी/तहसीलदार मौका रिपोर्ट द्वारा लघुत्तम रास्ते का अन्य कोई विकल्प प्रस्तावित किया गया है। उक्त शर्त के विश्लेषण में निम्न दो स्थितियां सामने आती हैं:-

1. प्रथम स्थिति में प्रार्थी द्वारा आवेदित रास्ता ही लघुत्तम रास्ते का विकल्प है। इस हेतु संबंधित तहसीलदार की मौका रिपोर्ट/स्वयं पीठासीन अधिकारी के मौका निरीक्षण से उक्त शर्त की पुष्टि किया जाना आवश्यक है। उक्त स्थिति में प्रार्थी द्वारा आवेदित रास्ते को ही लघुत्तम रास्ता माना जाना व्यावहारिक/कानूनन प्रतीत होता है।
2. द्वितीय स्थिति में प्रार्थी द्वारा आवेदित रास्ता के अतिरिक्त अप्रार्थी द्वारा प्रस्तावित/तहसीलदार की मौका रिपोर्ट द्वारा किसी अन्य लघुत्तम रास्ते/नजदीकी रास्ते/नजदीकी रास्ते का विकल्प प्रस्तावित किया जाता है। ऐसी स्थिति में तहसीलदार की मौका रिपोर्ट/स्वयं पीठासीन अधिकारी के मौका निरीक्षण एवं पत्रावली के तथ्यों व राजस्व रिकॉर्ड के अवलोकन के साथ-साथ निम्न तथ्यों को ध्यान में रखते हुए लघुत्तम रास्ते/नजदीकी रास्ते/नजदीकी रास्ते के मार्ग का निर्धारण किया जाना आवश्यक प्रतीत होता है:-

स्थिति	विवरण
1.	प्रार्थी द्वारा आवेदित रास्ते की लम्बाई एवं अप्रार्थी द्वारा प्रस्तावित/तहसीलदार की मौका रिपोर्ट द्वारा किसी अन्य लघुत्तम रास्ते/नजदीकी रास्ते लघुत्तम रास्ते/नजदीकी रास्ते का प्रस्तावित विकल्प की लम्बाई के अंतर की सीमा।
2.	प्रार्थी द्वारा आवेदित रास्ते की लम्बाई एवं अप्रार्थी द्वारा प्रस्तावित/तहसीलदार की मौका रिपोर्ट द्वारा किसी अन्य लघुत्तम रास्ते/नजदीकी रास्ते का प्रस्तावित विकल्प की लम्बाई के अंतर की व्यावहारिकता।
3.	प्रार्थी द्वारा आवेदित रास्ते तथा अप्रार्थी द्वारा प्रस्तावित/तहसीलदार की मौका रिपोर्ट द्वारा किसी अन्य लघुत्तम रास्ते/नजदीकी रास्ते का प्रस्तावित विकल्प की प्रार्थी की रहवास/घर के संदर्भ में व्यावहारिकता।
4.	प्रार्थी द्वारा आवेदित रास्ते तथा अप्रार्थी द्वारा प्रस्तावित/तहसीलदार की मौका रिपोर्ट द्वारा किसी अन्य लघुत्तम रास्ते/नजदीकी रास्ते का प्रस्तावित विकल्प में आने वाली आराजी के रकबे की अप्रार्थी की खातेदारी आराजी के रकबे के

	संदर्भ में व्यावहारिकता।
5.	प्रार्थी द्वारा आवेदित रास्ते तथा अप्रार्थी द्वारा प्रस्तावित/तहसीलदार की मौका रिपोर्ट द्वारा किसी अन्य लघुत्तम रास्ते/नजदीकी रास्ते का प्रस्तावित विकल्प में आने वाली आराजी के रकबे की क्षतिपूर्ति की प्रकृति (राशि/भूमि के बदले भूमि) के संदर्भ में व्यावहारिकता।
6.	प्रार्थी द्वारा आवेदित रास्ते तथा अप्रार्थी द्वारा प्रस्तावित/तहसीलदार की मौका रिपोर्ट द्वारा किसी अन्य लघुत्तम रास्ते/नजदीकी रास्ते का प्रस्तावित विकल्प पर अप्रार्थीगणों के मध्य सहमति/असहमति के संदर्भ में व्यावहारिकता।
7.	प्रार्थी द्वारा आवेदित रास्ते तथा अप्रार्थी द्वारा प्रस्तावित/तहसीलदार की मौका रिपोर्ट द्वारा किसी अन्य लघुत्तम रास्ते/नजदीकी रास्ते का प्रस्तावित विकल्प पर प्रार्थी द्वारा पूर्व से आमद-रफ्त के संदर्भ में व्यावहारिकता।
8.	प्रार्थी द्वारा आवेदित रास्ते तथा अप्रार्थी द्वारा प्रस्तावित/तहसीलदार की मौका रिपोर्ट द्वारा किसी अन्य लघुत्तम रास्ते/नजदीकी रास्ते का प्रस्तावित विकल्प से अन्य काश्तकारों को होने वाले अप्रत्यक्ष लाभ के दृष्टिकोण के संदर्भ में व्यावहारिकता।
9.	प्रार्थी द्वारा आवेदित रास्ते तथा अप्रार्थी द्वारा प्रस्तावित/तहसीलदार की मौका रिपोर्ट द्वारा किसी अन्य लघुत्तम रास्ते/नजदीकी रास्ते का प्रस्तावित विकल्प पर निर्माण/वृक्ष व अन्य सम्पतियों की अवस्थिति के दृष्टिकोण के संदर्भ में व्यावहारिकता।
10.	प्रार्थी द्वारा आवेदित रास्ते तथा अप्रार्थी द्वारा प्रस्तावित/तहसीलदार की मौका रिपोर्ट द्वारा किसी अन्य लघुत्तम रास्ते/नजदीकी रास्ते का प्रस्तावित विकल्प से अप्रार्थी के खसरे/संयुक्त खसरों/मौके पर एकल चकबंदी के खसरों के विखण्डन के दृष्टिकोण के संदर्भ में व्यावहारिकता।
11.	प्रार्थी द्वारा आवेदित रास्ते तथा अप्रार्थी द्वारा प्रस्तावित/तहसीलदार की मौका रिपोर्ट द्वारा किसी अन्य लघुत्तम रास्ते/नजदीकी रास्ते का प्रस्तावित विकल्प पर आने वाले खसरे/खसरों की संख्या के दृष्टिकोण के संदर्भ में व्यावहारिकता।
12.	प्रार्थी द्वारा आवेदित रास्ते तथा अप्रार्थी द्वारा प्रस्तावित/तहसीलदार की मौका रिपोर्ट द्वारा किसी अन्य लघुत्तम रास्ते/नजदीकी रास्ते का प्रस्तावित विकल्प पर आने वाले खसरे/खसरों के खातेदारों की एकलता/बहुलता के दृष्टिकोण के संदर्भ में व्यावहारिकता।
13.	अन्य बिन्दु जो न्यायालय प्रकरण-दर-प्रकरण आवश्यक समझे।

12. प्रकरण में तहसीलदार गुड़ामालानी द्वारा पत्रांक/कोर्ट/आरए/2024/2064 दिनांक 24.09.2024 द्वारा प्रेषित मौका रिपोर्ट में प्रार्थी की खातेदारी आराजी खसरा संख्या खसरा संख्या 331/2 मौजा आलपुरा तहसील गुड़ामालानी तक पहुच हेतु रास्ते के

संबंध में एक ही विकल्प प्रस्तावित किया है। प्रकरण में अप्रार्थी की आपत्तियों का विश्लेषण किया जाना उचित प्रतीत होता है। प्रकरण में अप्रार्थी का पहला आक्षेप है कि मौका रिपोर्ट बिना पक्षकारों को पूर्व सूचना दिये व बिना सक्षम अधिकारी के बिना मौका निरीक्षण किये रिपोर्ट तैयार की गई है। प्रकरण में तहसीलदार गुड़ामालानी पत्रांक/कोर्ट/आरए/2024/2064 दिनांक 24.09.2024 द्वारा प्रेषित मौका रिपोर्ट के अवलोकन से ज्ञात होता है कि प्रकरण में पक्षकारों को जरीये नोटिस पूर्वसूचित किया जाकर निर्धारित दिनांक को सक्षम अधिकारी द्वारा मौका रिपोर्ट तैयार की गई है। इस प्रकार अप्रार्थी का यह आक्षेप निराधार प्रतीत होता है। प्रकरण में अप्रार्थी का अगला आक्षेप है कि प्रार्थी द्वारा आवेदित रास्ते पर अप्रार्थीगण के ढाणी व टांके बने हुए हैं। परंतु इस संबंध में अप्रार्थी द्वारा कोई दस्तावेज/फोटो प्रस्तुत नहीं किये गये हैं। इस प्रकार अप्रार्थी का यह आक्षेप निराधार प्रतीत होता है। प्रकरण में अप्रार्थी का अगला आक्षेप है कि अप्रार्थी संख्या 01 व 02 के अधिवक्ता द्वारा आगे कथन किया गया कि प्रार्थी के खसरे से पहुंच हेतु जवाब के साथ प्रस्तुत परिशिष्ट-बी में दर्शाये अनुसार लघुत्तम वैकल्पिक रास्ता उपलब्ध है। साथ ही उक्त मौका रिपोर्ट में लघुत्तम मार्ग का अंकन नहीं किया गया है। जबकि प्रार्थी की आराजी तक पहुंचने हेतु सबसे नजदीकी विकल्प खसरा संख्या 329, 330, 330/12, 330/8, 331/1 के पश्चिमी कोने से होकर है। जिसको परिशिष्ट-बी के रूप में प्रदर्शित कर संलग्न किया गया है। परंतु इस संबंध में अप्रार्थी द्वारा कोई दस्तावेज/फोटो प्रस्तुत नहीं किये गये हैं। इस प्रकार अप्रार्थी का यह आक्षेप निराधार प्रतीत होता है।

13. प्रकरण में अप्रार्थी का अगला आक्षेप है कि साथ ही खसरा संख्या 330 व 330/8 की किस्म गै0मु0 नदी होने के कारण प्रतिबंधित किस्म की जगह से रास्ता का अंकन किया जाना विधि विरुद्ध है। प्रकरण के अवलोकन से ज्ञात होता है कि गुड़ामालानी-गादेवी सड़क पर स्थित अप्रार्थी संख्या 01 व 02 के खसरे से आगे लूणी नदी के खसरे से होकर अन्य अप्रार्थीगण के खातेदारी के खसरों से होकर एक और गै0मु0 नदी के खसरे से होकर प्रार्थी की खातेदारी आराजी तक रास्ता प्रस्तावित किया गया है। ऐसी परिस्थिति में खातेदारी आराजी से होकर प्रस्तावित रास्ते के मध्य में प्रतिबंधित किस्म व शामलात भूमि के खसरे अवस्थित हैं। ऐसी स्थिति में निजी खातेदारी आराजी में रास्ते का अंकन किया जा सकता है। साथ ही प्रतिबंधित व शामलात भूमि में रास्ते के अंकन की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि उक्त प्रतिबंधित व शामलात भूमियां राज्य सरकार में निहित होकर सार्वजनिक उद्देश्य के लिये आरक्षित की गई होती है। उक्त प्रतिबंधित व शामलात भूमियों पर कानूनन किसी व्यक्ति विशेष की पहुंच प्रतिबंधित नहीं होती है। इस प्रकार अप्रार्थी का यह आक्षेप निराधार प्रतीत होता है।
14. प्रकरण में अप्रार्थी का अगला आक्षेप है कि वर्तमान में प्रार्थी का खसरा पूर्व दिशा से चालू आम रास्ते से जुड़ा हुआ है। इस आधार पर प्रार्थी को रास्ते की आत्यांतिक आवश्यकता नहीं है। परंतु इस संबंध में अप्रार्थी द्वारा कोई दस्तावेज/फोटो प्रस्तुत नहीं किये गये हैं। इस प्रकार अप्रार्थी का यह आक्षेप निराधार प्रतीत होता है। प्रकरण में

अप्रार्थी का अगला आक्षेप है कि अप्रार्थी संख्या 01 व 02 के खसरो का रकबा भी कम है। इन खसरो में से होकर रास्ता दिये जाने से अप्रार्थीगण का रकबा और कम हो जाएगा। इस संबंध में पत्रावली व मौका रिपोर्ट के अवलोकन से ज्ञात होता है कि गुड़ामालानी-गादेवी सड़क से प्रार्थी की खातेदारी आराजी तक पहुंच हेतु अन्य वैकल्पिक रास्ता लेने पर वह वैकल्पिक रास्ता शायद लघुत्तम रास्ता नहीं रह पाता है। तहसीलदार गुड़ामालानी के पत्रांक/कोर्ट/आरए/2024/2064 दिनांक 24.09.2024 द्वारा प्रेषित मौका रिपोर्ट भी इसी ओर इंगित करती है। इस प्रकार अप्रार्थी का यह आक्षेप निराधार प्रतीत होता है।

15. प्रकरण में यथासंभव समस्त तथ्यों का विश्लेषण के पश्चात् तहसीलदार गुड़ामालानी द्वारा पत्रांक/कोर्ट/आरए/2024/2064 दिनांक 24.09.2024 द्वारा प्रेषित मौका रिपोर्ट द्वारा प्रस्तावित रास्ता व प्रार्थी द्वारा आवेदित रास्ता ही लघुत्तम/नजदीकी मार्ग का व्यावहारिक विकल्प प्रतीत होता है। अतः राजस्थान काश्तकारी अधिनियम-1955 की धारा 251-क के तहत आरोपित तीसरी शर्त के अनुसार नवीन रास्ते हेतु लघुत्तम/नजदीकी मार्ग का विकल्प तहसीलदार गुड़ामालानी द्वारा पत्रांक/कोर्ट/आरए/2024/2064 दिनांक 24.09.2024 द्वारा प्रेषित मौका रिपोर्ट द्वारा प्रस्तावित लाल रंग से अंकित का विकल्प को स्वीकार किया जाना उचित प्रतीत होता है।

निष्कर्ष

16. उक्त प्रकरण में राजस्थान काश्तकारी अधिनियम-1955 की धारा 251-क के विधिक प्रावधानों के सन्दर्भ में प्रार्थीगण हेतु रास्ते की अत्यान्तिक आवश्यकता एवं वैकल्पिक रिकार्डेड रास्ते हेतु अनुपलब्धता एवं तहसीलदार गुड़ामालानी द्वारा पत्रांक/कोर्ट/आरए/2024/2064 दिनांक 24.09.2024 द्वारा प्रेषित मौका रिपोर्ट मय नजरी नक्शा के आधार पर प्रार्थी का प्रार्थना पत्र राजस्थान काश्तकारी अधिनियम 1955 की धारा 251-क काबिल-ए स्वीकार है। अतः तहसीलदार गुड़ामालानी द्वारा पत्रांक/कोर्ट/आरए/2024/2064 दिनांक 24.09.2024 द्वारा प्रेषित मौका रिपोर्ट मय नजरी नक्शा के अनुसार खसरा संख्या 331/2 मौजा आलपुरा तहसील गुड़ामालानी तक अप्रार्थी की खातेदारी आराजी खसरा संख्या 328, 330/11, 330/3 व 331/1 मौजा आलपुरा तहसील गुड़ामालानी के सेढे-सेढ नवीन रास्ता हेतु प्रस्तावित लाल रंग से अंकित लघुत्तम/नजदीकी मार्ग पर बतौर 03 गट्टा चौड़ा गैर मुमकिन रास्ता नियमानुसार भूमि एवं निर्माण, अगर कोई हो तो, की क्षतिपूर्ति राशि भुगतान पश्चात् राजस्व रिकार्ड में दर्ज किया जाना न्यायसंगत प्रतीत होता है। अतः

आदेश है कि

राजस्थान काश्तकारी अधिनियम-1955 की धारा
251-क के अन्तर्गत प्रार्थीगण का प्रार्थना पत्र

तहसीलदार गुड़ामालानी द्वारा
पत्रांक/कोर्ट/आरए/2024/2064 दिनांक 24.09.
2024 द्वारा प्रेषित मौका रिपोर्ट मय नजरी नक्शा के
अवलोकन पश्चात विश्लेषित निष्कर्ष अनुसार प्रार्थीगण
हेतु रास्ते की अत्यान्तिक आवश्यकता एवं वैकल्पिक
रिकार्डेड रास्ते हेतु अनुपलब्धता के आधार पर स्वीकार
किया जाता है एवं तहसीलदार गुड़ामालानी को आदेश
दिये जाते हैं कि दिनांक 24.09.2024 की मौका
जाँच रिपोर्ट में आराजी हाल खसरा संख्या 328,
330/11, 330/3 व 331/1 मौजा आलपुरा में से
होकर लाल रंग से अंकित मार्ग पर 08 मीटर चौड़ाई
के रास्ते में आयी भूमि एवं निर्माण के एवज में
राजस्थान काश्तकारी (सरकार) नियम 1955 के
नियम-70 के अनुसार क्षतिपूर्ति राशि आंकलित कर
नियमानुसार क्षतिपूर्ति राशि के नियमानुसार भुगतान
पश्चात् उक्त नवीन रास्ते को खाता संख्या-1
सिवायचक में सार्वजनिक उपयोग हेतु किस्म गैर
मुमकिन रास्ता दर्ज कर अंकन किया जावे। दिनांक
20.09.2024 की मौका जाँच रिपोर्ट व नजरी नक्शा
निर्णय का अनन्य भाग रहेगा।

उक्त निर्णय की पालना हेतु एक प्रति तहसीलदार गुड़ामालानी को भिजवायी जावे।
यह आदेश आज दिनांक 10.02.2025 को लिखवाया जाकर सरे-इजलास सुनाया गया एवं
अधोहस्ताक्षकर्ता की मुहर व हस्ताक्षर से जारी किया गया।

(केशव कुमार मीना आर.ए.एस)

सहायक कलक्टर
गुड़ामालानी-बाड़मेर

सत्यमेव जयते

गुड़ामालानी